International Journal of Social Research and Development
www.socialsciencejournal.net
Online ISSN: 2664-8709, Print ISSN: 2664-8695
Received: 04-04-2022, Accepted: 20-04-2022, Published: 05-05-2022
Volume 4, Issue 1, 2022, Page No. 28-29

रूस–यूक्रेन संघर्ष का भारतीय राजनीति एवं कूटनीति पर प्रभाव का अध्ययन

राम दर्शन
एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, श्री जे. जे. टी. विश्वविद्यालय झुन्झुनू, राजस्थान, भारत

सारांश
यूक्रेन–रूस वॉर को शुरू हुए लगभग 61 दिन से अधिक दिन बीत चुके हैं लेकिन अभी तक यह लड़ाई किसी भी अंजाम तक नहीं पहुंच पाई है बल्कि दिन गुज़रने के साथ ही ये भीषण रूप ले रही है। हालांकि, रूस और यूक्रेन के बीच दो दौर की बातचीत बेलारूस में हुई है लेकिन उसका कोई परिणाम धरातल पर दिखाई नहीं देता है। इसका सबसे बड़ा कारण पश्चिमी देशों का रवैया है, जिस प्रकार पश्चिमी देश रूस को उकसा रहे हैं, उससे साफ दिखाई पड़ता है कि यह युद्ध ना केवल हथियारों की ज़ोर आज़माइश बल्कि विश्व राजनीति के प्रयोगों की प्रयोगशाला भी है।

मूल शब्दः रूस–यूक्रेन संघर्ष, भारतीय राजनीति, कूटनीति, प्रभाव

प्रस्तावना
एक ओर अमेरिका सहित अन्य पश्चिमी देश रूस के विरुद्ध नए–नए प्रतिबंध लगा रहे हैं और दूसरी तरफ यही देश यूक्रेन को सैन्य सहायता देने में डर भी रहे हैं, क्योंकि वह रूस की ताकत को समझते हैं और यह भी समझते हैं कि अगर इस लड़ाई में पश्चिमी देश कूदते हैं, तो इस युद्ध का रुख पूरी तरह बदल जाएगा, क्योंकि यह नई विश्व व्यवस्था की तरफ बढ़ता हुआ कदम है और एक तरह से यह युद्ध कम्युनिस्ट वर्ल्ड बनाम पश्चिम हो जाएगा।
दूसरी तरफ अमेरिका, जो इस पूरे प्रकरण का सबसे बड़ा खिलाडी है, वो अपने वर्चस्व को बनाए रखने के लिए इस युद्ध में सैन्य रूप से सम्मिलित होने में संकोच कर रहा है, क्योंकि इस युद्ध में सबसे अधिक फायदा अगर किसी का हो रहा है, तो वह है अमेरिका, दुनिया के रूस पर लगाए गए प्रतिबंधों से सीधा फायदा अमेरिका को होने वाला है और हम अगर आर्थिक रूप से इसके प्रभावों की बात करें, तो इस समय रूस पर प्रतिबंधो के कारण रूस की करेंसी रूबल डॉलर के मुकाबले बहुत बुरी स्थिति में है, क्योंकि वह अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 30 फीसदी तक टूट गई है लेकिन इसके साथ यह समझना भी बहुत ज़रूरी है कि यह युद्ध अपनी आर्थिक शक्ति को दर्शाने का नहीं बल्कि सैन्य शक्ति प्रदर्शित करने के साथ–साथ अपने वर्चस्व को कायम रखने का है।

भारत पर आर्थिक–राजनैतिक प्रभाव
गौरतलब है कि यूक्रेन–रूस युद्ध का प्रभाव पूरी दुनिया पर पड़ रहा है साथ ही यह संभावना भी जताई जा रही है कि यह युद्ध विश्व युद्ध में बदल सकता है और यही डर आज पूरे विश्व को सता रहा है। इस लड़ाई ने वैश्विक स्तर पर महंगाई के जिन्न को भी उसके चिराग से बाहर निकाल दिया है।
इस युद्ध का प्रभाव ना केवल ऑयल इंडस्ट्री पर पड़ेगा बल्कि छोटे– बड़े कई व्यापार भी इस की लपेट में आएंगे। भारत और यूक्रेन के बीच कपड़े का कारोबार एक बड़े स्तर पर किया जाता है जिस पर इस युद्ध का भयंकर प्रभाव देखने को मिल रहा है।
नोएडा, दिल्ली सहित भारत के कई शहरों से रेडीमेड कपड़ों का निर्यात पूरे यूरोप में बड़े पैमाने पर किया जाता है और अब इस युद्ध की वजह से सप्लाई चौन बुरी तरह से प्रभावित हुई है। नई दिल्ली स्थित यूक्रेन एम्बेसी के अनुसार, भारत यूक्रेन से करीब 2 बिलियन डॉलर यानि करीब डेढ़ खरब डॉलर का बिज़नेस करता है और निश्चित तौर पर यह इस युद्ध से प्रभावित हो रहा है जिसका असर सीधे तौर पर आम आदमी की जेब पर पड़ेगा।

तेल के दामों पर असर
भारत में अभी कच्चे तेल की कीमतों में उछाल नहीं है लेकिन यह लम्बे समय तक टिकने वाला नहीं है, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल के दाम में लगभग 15: तक वृद्धि देखने को मिल रही है, जिसका साफ शब्दों में मतलब है कि भारत में तेल की कीमतें ज़ल्दी ही बढ़ने वाली हैं।
इसलिए निश्चित है कि इस युद्ध से विश्व स्तर पर व्यापार एक लम्बे समय तक नहीं सम्भलने वाला है और भारत सरकार को इस आपदा से लड़ने के लिए अभी से ही सुनियोजित योजना बनाकर इस पर काम करने की सख्त ज़रूरत है।

भारत पर कूटनीतिक एवं राजनीतिक प्रभाव
यूक्रेन में युद्ध रोकने की मांग वाले संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव पर वोटिंग से भारत के बाहर रहने का अर्थ सैद्धांतिक रूप से रूस का समर्थन है। विशेषज्ञों का कहना है कि यह रूस पर भारत की निर्भरता प्रदर्शित करता है। भारत ने यूक्रेन विवाद में कूटनीतिक रास्ता बंद होने पर अपने दुख का इज़हार किया लेकिन साथ ही भारत ने अमेरिका

के साथ ना जाकर, उस प्रस्ताव पर वोट करने से मना कर दिया, जो रूस के विरुद्ध था। भारत का वोट मुमकिन है कि बीते 70 सालों से उसके मित्र रहे रूस से संबंधों का तानाबाना बिगाड़ देता।
रूस ने इस प्रस्ताव पर वीटो का उपयोग किया जबकि चीन और संयुक्त अरब अमीरात भी भारत की तरह ही वोटिंग से गैरहाज़िर रहे। रूस ने उम्मीद जताई थी कि सुरक्षा परिषद में भारत उसका सहयोग करेगा और भारत के पूर्व राजनयिक जी पार्थसारथी कहते हैं, "हमने रूस का समर्थन नहीं किया है और हम इससे बाहर रहे हैं। वैसे, इस तरह की परिस्थितियों में यह करना सही है।"
प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ टेलीफोन पर तीस मिनट की बातचीत में युद्ध को रोकने की अपील की थी। प्रधानमंत्री ने कूटनीति के रास्ते पर लौटने की मांग करते हुए कहा, "रूस और नाटो के साथ विवाद को सिर्फ गंभीर बातचीत से सुलझाया जा सकता है।"
रूस पर निर्भर भारत–कश्मीर मामले में पाकिस्तान के साथ विवाद में रूस के सहयोग और सुरक्षा परिषद में वीटो के लिए निर्भर रहा है। यूक्रेन से विवाद के दौरान जब पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान मास्को पहुंचे, तो भारत वहां हो रही गतिविधियों पर बारीकी से नज़र रख रहा था।
इस भीषण युद्ध की स्थिति में भी पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान से पुतिन की मुलाकात करीब 3 घंटे चली थी, यह इस बात का संकेत है कि भारत को राजनैतिक मोर्चे पर बहुत गंभीर होने की आवश्यकता है, क्योंकि यूक्रेन युद्ध ने भारत के लिए ना सिर्फ कश्मीर बल्कि चीन के साथ भी चल रहे विवाद में नई प्रकार की चुनौतियां पैदा की हैं।
पाकिस्तान और चीन दोनों का रूस की तरफ झुकाव है और भारत मानता है कि रूस, चीन को भारत के साथ सीमा विवाद में नरमी दिखाने के लिए उसका एक माहौल तैयार कर सकता है। जून 2020 में भारत और चीन के सीमा विवाद ने अचानक से एक हिंसक रूप ले लिया था, तब से कई दौर की बातचीत होने के बावजूद तनाव की स्थिति बनी हुई है।
रूस विश्व में बहुत सारे देशों के लिए बहुत महत्पूर्ण है, क्योंकि यह ना केवल तेल, गैस, मिनरल्स बल्कि बहुत सी चीज़ों के मामले में भी एक बड़ा प्लेयर है। रूस और यूक्रेन के बीच चल रहा युद्ध हर गुज़रते दिन के साथ और भीषण होता जा रहा है।
इस दौरान रूस लगातार हमलावर रहा है, तो वहीं अब यूक्रेन ने भी घुटने ना टेकने की ठान ली है। इस जंग को खतरनाक मानने की एक प्रमुख वजह यह भी है कि पहली बार दूसरे विश्व युद्ध के बाद कोई इतना बड़ा युद्ध हो रहा है।

निष्कर्ष

अगर यह युद्ध ऐसे ही कुछ दिनों तक चलता रहा, तो ज़ल्द ही यह तीसरे विश्व युद्ध में बदल सकता है, जिससे पूरी दुनिया पर एक भीषण संकट गहरा जाएगा। इन दो देशों के बीच चल रही जंग ने एक बार फिर दुनिया के सभी देशों को दो धड़ों में बांट दिया है।
यूक्रेन पर हमला करने से नाराज़ कई देश लगातार रूस पर प्रतिबंध लगा रहे हैं लेकिन इन प्रतिबंधो का रूस और यूक्रेन के युद्ध पर कितना असर पड़ता दिखाई नहीं दे रहा है बल्कि इसके अलावा युद्ध के बाद प्रतिबंध लगाने वाले देशों के साथ रूस किस तरह का संबंध रखता है? यह देखना भी अपने आप में दिलचस्प होने वाला है।
यूक्रेन, विश्व का सबसे बड़ा रिफ़ाइन्ड सूरजमुखी के तेल का निर्यातक देश है. दूसरे स्थान पर रूस हैद्य दोनों देशों के बीच तनाव इसी तरह से अगर लंबे समय तक जारी रहे तो घरों में इस्तेमाल होने वाले सूरजमुखी के तेल की किल्लत भारत में हो सकती हैद्य इसके अलावा यूक्रेन से भारत फर्टिलाइज़र भी बड़ी मात्रा में ख़रीदता है. भारतीय नेवी के इस्तेमाल के लिए कुछ टर्बाइन भी यूक्रेन भारत को बेचता है.द्य फर्टिलाइजर की क़िल्लत की भरपाई तो भारत दूसरे देशों से फिर भी कर सकता हैद्य नेवी के लिए ख़रीदे गए टर्बाइन हाल–फिलहाल में ही भारत पहुँचे हैं. इस वजह से आने वाले दिनों में समस्या केवल खाने के तेल की हो सकती हैद्य
रूस यूक्रेन युद्ध भारत की राजनीतिक, सामरिक और आर्थिक स्थिति को बड़े स्तर पर प्रभावित करने वाला है। कई विशेषज्ञों का कहना है कि भारत इस समय बीच मझधार में फंस चुका है। उसके लिए ये तय कर पाना काफी मुश्किल हो गया है कि यूरोप या रूस किसके साथ जाना सही रहेगा। ऐसे में इस युद्ध ने आज दोबारा गुटनिरपेक्षता की नीति को प्रासंगिक कर दिया है। ये युद्ध अगर आने वाले समय में एक बड़ा रूप लेता है, तो इससे भारत की अर्थव्यवस्था बुरे तौर पर प्रभावित होगी।

संदर्भ

1. Barnes, Julian E-Crowley, Michael (Schmitt] Eric: 10 January 2022:"Russia Positioning Helicopters] in Possible Sign of Ukraine Plans"- The New York Times-
2. Bengali Shashank. "The U-S- says Russia's troop buildup could be as high as 190]000 in and near Ukraine"- The New York Times-
3. "Russia attacks Ukraine"- CNN- 24 February 2022- ewy ls 24 February 2022 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 24 February 2022-
4. "Why is Russia invading Ukraine and what does Putin want"- BBC News- 24 February 2022- मूल से 19 December 2021 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 24 February 2022-
5. "Ukraine & Russia invasion: Russia launches attack on Ukraine from several fronts"- BBC News- ewy ls 21 February 2022 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 24 February 2022-
6. "यूक्रेन के राष्ट्रपति वलोडिमिर ज़ेलेंस्की ने रूस के खिलाफ वैश्विक विरोध का आग्रह किया". Nav Bharat Times- 24 March] 2022-
7. सिंह, अमित (19 मार्च, 2022). भारतीय समाचार पत्रों पर भी भारी पड़ रहा रूस–यूक्रेन युद्ध. दैनिक जागरण (19 मार्च, 2022).